सतिगुर वचनु उतो, वेद पुरान मथे करे,
विरले कंहिं गुरुमुख खे, हिरिदे मंझि खुतो,
कढियो तंहिं अंदर मों, अविद्या लोभ-कुतो,
सदाईं अछुतो, सामी रहे सुभाव में.

सतगुरु ने वेद-पुराण ग्रंथों का मंथन (चिंतन-मनन) कर एक वचन (वाक्य) कहा। वह वचन एक बाण की भाँति किसी गुरुमुख के हृदय में बिंध गया। उस वचन के प्रभाव के परिणामस्वरूप उस गुरुमुख ने अपने हृदय से अविद्या/अज्ञान रूपी कुत्ते (श्वान) को बाहर निकाल दिया। इसलिए अब वह सदा के लिए निर्मल स्वभाव वाला बन गया है।

'श्रीगुरु गीता' नामक संस्कृत ग्रंथ में कहा गया है कि गुरु आत्मा है, परमात्मा है। गुरु ईश्वर का अन्य रूप है। वह ब्रह्मरूप है। ब्रह्म सतगुरु के रूप में प्रकट होते हैं। अत: गुरु-भक्ति परमात्मा को प्राप्त करने का अंतिम साधन है। सतगुरु ही मनुष्य को परमात्मा से मिलाते हैं। वही अज्ञान मिटा सकते हैं। जीव/मनुष्य को अंदरवाली ईश्वरीय शक्ति जाग्रत करने के लिए सतगुरु के सान्निध्य में जाना आवश्यक है। 'शक्तिपात' करने की शिष्य में शक्ति जाग्रत करने की सामर्थ्य सतगुरु में ही होती है। सतगुरु ही शिष्य की परख कर उसमें योग्यता होने पर शक्तिपात-दीक्षा देते हैं। यह दीक्षा मिलते ही जिस प्रकार एक दीपक से दूसरा दीपक प्रज्वलित होता है, उसी प्रकार गुरु-शक्ति के संबंध से शिष्य की कुंडलिनी शक्ति जाग्रत होती है। परिणामत: दिव्य-ज्ञान प्राप्ति में बाधक पाप, चित्त की चंचलता, अज्ञान का आवरण आदि सभी दोषों का धीरे-धीरे नाश होने लगता है। सभी संप्रदायों में न्यूनाधिक शक्ति-संचार मंत्र-उपदेश द्वारा होता है। यही 'वचन' या उपदेश अथवा मंत्र अति महत्वपूर्ण है। इसी के जाप से चैतन्य-शक्ति जाग्रत होती है। यह शक्ति सतगुरु ही जाग्रत करने वाले होते हैं, इसलिए सतगुरु/गुरु को साक्षात् परब्रह्म कहा गया है।

गुरु नारायण रूप है, गुरु ज्ञान को घाट।
सतगुरु वचन प्रताप सों, मन के मिटे उचाट।।

सामी साहब भी सतगुरु एवं उनके वचन/उपदेश/दीक्षा-मंत्र का महत्व प्रतिपादित करते हैं, जो वेदादि ग्रंथों के उपदेश आदि के ऊपर है। सतगुरु ही अपने सद् शिष्य को श्रेष्ठ बना सकते हैं। स्वामी विवेकानंद जी के शब्दों में, 'गुरु-भक्ति आध्यात्मिक/आत्मिक विकास का आधार है। गुरु आत्म-साक्षात्कारी होते हैं। गुरु ही शिष्य को जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले होते हैं।'

■